ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले में आधुनिक शिक्षा का विकास क ऐतिहासिक विवेचन (1867 से 1975 ई. तक)

Historical analysis of the Development of modern education in Balaghat District of Madhya Pradesh (1867 to 1975 AD)

Paper Submission: 15/01/2020, Date of Acceptance: 26/01/2020, Date of Publication: 27/01/2021

गीतांजली सरयाम
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
राजकीय स्वायत्तशासी पी.जी. कॉलेज, छिंदवाड़ा, भारत

सारांश

मध्यप्रदेश की सतपुड़ा पर्वतमाला के पूर्वी भाग में स्थित बालाघाट जिले की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्परायें वैविध्यपूर्ण रही हैं। ब्रिटिश शासन की स्थापना के पूर्व यहाँ के गोण्ड तथा मराठा (भोंसला) राजवंशों का शासन था। इन शासकों का शिक्षा के विकास के प्रति दृष्टिकोण सर्वथा भिन्न था। यही कारण था कि इनके राज्यकाल में बालाघाट जिले के भू–भाग में शिक्षा की कोई निश्चित पध्दति प्रचलित नहीं थी। 1854 ई. में यह क्षेत्र औपचारिक रूप से ब्रिटिश साम्राज्यन्तर्गत हो गया। उसी समय से यहाँ आधुनिक अथवा पाष्चात्य शिक्षा का प्रादुर्भाव हुआ।

बालाघाट जिले के शैक्षणिक विकास का अध्ययन करने पर पता चलता है कि यहाँ शिक्षा के प्रचार–प्रसार की गति काफी मन्द थी। 1947 अर्थात् भारत की आजादी तक अंग्रेज षासकों का ध्यान केवल विद्यालयीन शिक्षा पर ही केन्द्रित रहा। उच्च, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा की और विषेष ध्यान नहीं दिया गया। जिले में स्त्री शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय बनी रही। मध्यप्रांत की राजधानी नागपुर की निकटता के बावजूद अंग्रेजी शासन ने बालाघाट जिले में शिक्षा का पर्याप्त प्रचार–प्रसार नहीं किया। यह भी सत्य है कि स्वतंत्रता प्राप्ति और राज्य पुनर्गठन के बाद मध्यप्रदेश सरकार द्वारा शिक्षा की प्रगति के लिये किये गये प्रयास अपर्याप्त सिध्द हुये। जिला प्रदेश अन्य जिलों की तुलना में काफी पिछड़ा हुआ था। निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि जिले में शिक्षा के सर्वांगीण विकास के लिये और अधिक प्रयासों की महत्वपूर्ण आवश्यकता थी।

The political, social and cultural traditions of Balaghat district located in the eastern part of the Satpura ranges of Madhya Pradesh have been varied. Before the establishment of British rule, the Gond and Maratha (Bhonsala) dynasties ruled here. The attitude of these rulers towards the development of education was completely different. This was the reason that during his reign there was no definite system of education in the terrain of Balaghat district. In 1854 AD, this area formally became under the British Empire. From the same time modern or western education emerged here.

A study of the educational development of Balaghat district shows that the pace of propagation of education was very slow here. Till 1947, ie, until the independence of India, the focus of British rulers was focused only on school education. Higher, technical and vocational education was not given special attention. The condition of female education in the district remained extremely pathetic. Despite the proximity of the capital of Madhya Pradesh to Nagpur, the British did not promote education sufficiently in the Balaghat district. It is also true that the efforts made by the Madhya Pradesh government for progress of education after the attainment of independence and reorganization of the state proved insufficient. The district state was quite backward compared to other districts. In conclusion, it can be said that more efforts were needed for the all-round development of education in the district.

मुख्य शब्द : बालाघाट, शिक्षा का विकास
Balaghat, Development of Education.

प्रस्तावना

बालाघाट जिला, मध्यप्रदेश की सतपुड़ा पर्वतश्रेणी के दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र में स्थित है। यह इस प्रदेश के जबलपुर संभाग का एक प्रमुख जिला है। ब्रिटिश शासन की स्थापना के पूर्व इस जिले के भू–भाग पर नागपुर के भोंसलों का शासन था। 1818 ई. में अंग्रेजों ने नर्मदा–सागर क्षेत्र को अपने अधिकार में ले लिया जिसमें बालाघाट जिले का पश्चिमी भाग भी सम्मिलित था लेकिन 1854 में भोंसला का पतन हो जाने तथा नागपुर राज्य पर वास्तविक ब्रिटिश सत्ता स्थापित होने के पष्चात् बालाघाट जिले का समस्त भू–भाग औपचारिक रूप से ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत हो गया।

वह स्थान, जहाँ वर्तमान में बालाघाट नगर स्थित है ''बुरहा'' के नाम से जाना जाता था। जिले के गठन के समय इससे लगे हुये गांव ''बुरही'' को भी नगरपालिका सीमा में शामिल कर लिया गया और इस जिले का नाम ''बुरहा'' रखा गया। 1857 ई. में जिले की स्थापना को अस्थायी मंजूरी दी गई। आगे चलकर ब्रिटिश प्रशासकों ने 1895 ई. में ''बुरहा'' का नाम परिवर्तित कर बालाघाट को मान्यता प्रदान कर दी।[1]

शिक्षा का विकास :

शिक्षा किसी भी देश, राज्य, अथवा क्षेत्र के जीवन का मूलमंत्र है जिसके द्वारा उसका राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौतिक उत्थान होता है। जहाँ तक बालाघाट जिले में आधुनिक शिक्षा पध्दति का संबंध है इसका आरंभ 19वीं शताब्दी के मध्य अर्थात् ब्रिटिश शासन के अंतर्गत ही संभंव हो सका था।

प्राथमिक शिक्षा

हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा का अत्यधिक महत्व रहा है। प्रारम्भ में शिक्षा की दो अवस्थायें होती है अर्थात् पूर्व प्राथमिक तथा प्राथमिक। पूर्व प्राथमिक शिक्षा की एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है। वस्तुतः पूर्व प्राथमिक पध्दति कोई नई पध्दति नही है।

1861 ई. में मध्यप्रान्त के गठन हुआ। इसके पष्चात् इस जिले में प्राथमिक शिक्षा के विकास के प्रयास किये गये। पूर्व मध्यप्रांत का एक प्रमुख अंग होने के कारण इस क्षेत्र शिक्षा संबंधी इतिहास ब्रिटिश साम्राज्य की सामान्य प्रगति के अनुरूप था। भारत के अन्य भागों के समान यहाँ सर्वप्रथम विद्यालय स्थापित करने का श्रेय भी ईसाई मिषनरियों को जाता है। षनैः षनैः स्थानीय प्रयास प्रारंभ हुये। मध्यप्रान्त में वर्ष 1963–64 में शिक्षा विभाग की स्थापना हुई एवं संचालक लोक षिक्षण तथा जिला विद्यालय निरीक्षकों की नियुक्ति हुई।[2]

बालाघाट जिले में सर्वप्रथम हिन्दी पाठषाला अथवा मदरसा ब्रिटिश शासन द्वारा 1854 में किसी समय खोला गया था।[3] इसके अतिरिक्त बालाघाट नगरपालिका की स्थापना (1877) के साथ ही शासन द्वारा यहाँ मेनबोर्ड प्राथमिक षाला स्थापित की गई जिसे आगे चलकर नगरपालिका को सौंप दिया गया। यह बालाघाट की सबसे पुरानी पाठषाला है।[4] जिला अधिकारियों के अनुरोध के कारण ही इस विद्यालय में पांचवी कक्षा षुरू की गई और जिले में पहली बार अंग्रेजी शिक्षा प्रारंभ की गई। यह अकाट्य सत्य है कि जिले में प्राथमिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार में मसीही संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस सन्दर्भ में स्थानीय लेखक डी.एल. मसीह ने लिखा है कि– शिक्षा हेतु षालायें, बच्चों के लिये छात्रावास, चिकित्सा हेतु छोटे अस्पताल और अंधविष्वासों से बचाने के हेतु मसीही शिक्षा के प्रसार के लिये छोट–छोटे चर्च भवन बनवाये।[5]

ऐसा प्रतीत होता है कि मध्यप्रांत तथा बरार सरकार के शिक्षा विभाग ने 19वीं षताब्दी के अंतिम दषक में विद्यालयीन शिक्षा पर ध्यान देना आंरभ किया। 1891–92 में जिले में 35 शालायें थी।[6] इसके पष्चात् दषक दर इन षालाओं की संख्या निरन्तर बढ़ती चली गई। यद्यपि प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गति काफी धीमी थी तथापि 1846–47 ई. तक इनकी संख्या बढ़कर 141 अंकित की गई।

स्वतंत्रता के पश्चात्, देश में शिक्षा के विकास के लिये नये युग की शुरूआत हुई। इस काल में मुख्यतः आयोजना अवधियों में प्राथमिक शिक्षा की अत्यधिक प्रगति हुई। 1951 में प्राथमिक शालाओं की संख्या 241 थी जो 1970–71 में बढ़कर 840 हो गई। इन संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या 74371 एवं 2145 षिक्षक इनमें कार्यरत थे।[7]

प्राथमिक शिक्षा के विकास में प्रायवेट संस्थाओं ने भी उल्लेखनीय योगदान दिया। पूर्व प्राथमिक शालाओं की प्रगति नगण्य थी। 1970–71 तक जिले में केवल 6 पूर्व प्राथमिक षालायें थी।

माध्यमिक शिक्षा

माध्यमिक (मिडिल) शिक्षा सामान्यतः दो प्रकार के विद्यालयों में दी जाती थी। भारतीय मिडिल विद्यालय तथा अंग्रेजी मिडिल विद्यालय। भारतीय मिडिल विद्यालयों में पाँचवी, छठी और सातवीं कक्षा लगा करती थी। ये मुख्यतः स्थानीय संस्थाओं के अधीन होते थे तथा इसमें हिन्दी, मराठी तथा उर्दू के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी।[8]

19वीं षताब्दी के अंत में बालाघाट जिले में नियमित शिक्षा का सूत्रपात हुआ। 1904–05 तक जिले में 4 माध्यमिक स्कूल थे। इनमें से 3 वर्नाक्यूलर षालायें थी जहाँ देशी भाषा में शिक्षा दी जाती थी। अंग्रेजी माध्यम का स्कूल बालाघाट में स्थित था।[9] इनके पाठ्यक्रम में अंग्रेजी भाषा एवं अनिवार्य विषय थे तथा अन्य विषयों में भूगोल, इतिहास, ड्राइंग एवं विज्ञान थे। कहीं–कहीं कृषि विषय को भी व्यवस्था थी।

1946–47 में जिले में 17 माध्यमिक विद्यालयों में 3572 छात्रों को प्रवेष दिया गया, जिन्हें 156 षिक्षक पढ़ाते थे। स्वातंत्र्योत्तर काल काल में पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी। 1960–61 में इनकी संख्या 67 थी, जो 1971–72 में बढ़कर 132 हो गई।[10]

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

अधिकांष विद्यालयों के लिये यह स्तर औपचारिक शिक्षा का अंतिम सोपान होता था। हाई स्कूल

षासकीय, स्थानीय संस्थाओं तथा निजी प्रबन्ध के अन्तर्गत हुआ करते थे। 1911 में बालाघाट में पहला हाई स्कूल खोला गया। इस सन्दर्भ में श्री गहरवाल और स्पष्ट करते हुये लिखते हैं कि– ''1911 में बालाघाट नगर में प्रथम ष्षासकीय उच्चतर माध्यमिक षाला की स्थापना हुई।''[11] ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में हाईस्कूल शिक्षा के प्रति शासन तथा स्थानीय संस्थायें उदासीन बनी रही। लम्बी अवधि बीत जाने के बाद वर्ष 1946–47 में बालाघाट नगर में दो हाईस्कूल खोले गये जो क्रमषः इस प्रकार थे– महात्मा गांधी म्यूनसिपल हाईस्कूल तथा षासकीय कन्या हाईस्कूल। आजादी के बाद जिले में हाई स्कूल/उच्चतर माध्यमिक षालाओं की संख्या में तीव्र वृध्दि दर्ज की गई। 1950–51 में जहाँ इन स्कूलों की संख्या 4 थी वहीं 1973–74 में बढ़कर 34 हो गई।[12]

तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा

1946–47 में महाकौषल क्षेत्र में तकनीकी शिक्षा कुछ औद्योगिक विद्यालयों तक ही सीमित थी, जो प्राथमिक शिक्षा के पष्चात् दो या तीन वर्ष का बढ़ईगिरी, दर्जीगिरी अथवा जूते बनाने का प्रषिक्षण दिया जाता था। कुछ प्रत्यक्ष रूप से शासन के अंतर्गत थे। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तकनीकी शिक्षा के स्वरूप में बड़ा परिवर्तन परिलक्षित हुआ। बालाघाट में तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिये 1962 में पॉलीटेक्निक विद्यालय की स्थापना की गई। यह संस्था दीवान एम.एम. मुलना के निवास स्थान व उसके परिसर में स्थापित की गई।[13] यह संख्या उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर रही। यह संस्था मध्यप्रदेश तकनीकी शिक्षा मण्डल, भोपाल से संबध्द रही है। यह सिविल, मेकेनिकल तथा विद्युत इन्जीनियरिक में तीन वर्षीय पत्रावधि पाठ्यक्रम की शिक्षा प्रदान करता था। 1971–72 में यहाँ 102 छात्र अध्ययनरत् थे।[14]

वन विद्यालय

प्रकृति ने बालाघाट जिले को भरपूर वन सम्पदा से नवाजा है। 1907 में यहाँ एक वन विद्यालय की स्थापना की गई। इसके संस्थापक ए.वी.एस.टी वीची थे। यहाँ 20 छात्रों को प्रतिवर्ष वानिकी में प्रषिक्षण दिया जाता था।[15]

उच्च शिक्षा

1954 ई. के पूर्व बालाघाट जिले में महाविद्यालयीन शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। लगभग एक षताब्दी के शैक्षणिक इतिहास के बाद मध्यप्रदेश शासन तथा जटाषंकर त्रिवेदी के प्रयासों से तथा दान राषियों के सहयोग से एक महाविद्यालय की स्थापना की गई। प्रारम्भ में यह केवल एक उपाधि महाविद्यालय था। 1970 में इसे स्नातकोत्तर महाविद्यालय घोषित कर दिया। यह प्रारम्भ में सागर विष्वविद्यालय से संबध्द रहा है।[16] सत्र 2003–04 में इस महाविद्यालय को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यापन परिषद् बैंगलौर द्वारा ठ श्रेणी संस्थान का दर्जा दिया गया।[17]

महिला शिक्षा

जिले में स्त्री शिक्षा की प्रगति अत्यधिक मंद थी। जिले का पिछड़ापन तथा लड़कियों की शिक्षा को अनावष्यक समझना इसके मुख्य कारण थे। जिले में 1867 के पष्चात् ही महिला शिक्षा की ओर ध्यान दिया गया। यहाँ स्वतंत्रता के पूर्व यहाँ बालिका शिक्षा संस्थाओं की संख्या नगण्य मात्र थी। 1850–51 में जिले में एक मात्र बालिका हाई स्कूल था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पष्चात् विभिन्न आयोजनाओं के अन्तर्गत महिला शिक्षा के प्रचार के लिये महान प्रयास किये गये। जिले में 1970–71 तक महिला षिक्षण संस्थाओं की संख्या इस प्रकार थी – 26991 प्राथमिक षालायें, 3011 माध्यमिक षालायें, 1526 हायर सेकेण्डरी स्कूल तथा 8 कॉलेज थे।[18]

अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों में शिक्षा का प्रसार

मध्यभारत तथा बरार प्रांत में अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों की स्थितियों में सुधार करने के लिये समय–समय पर कदम उठाये गये। इन वर्गों के लिये शिक्षा सुविधाओं की जांच करने के लिये सरकार द्वारा नियुक्त समितियों द्वारा की सिफारिषों के आधार पर सरकार ने उनके लिये अभीष्ठ छात्रावासों तथा विद्यालयों, षालाओं तथा महाविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों को छात्रवृत्तियाँ दी। अपने माता–पिता का अलग (छात्रावास आदि में) रहने वाले छात्रों को अधिक उदार छात्रवृत्तियाँ दी जाती थी।[19]

बालाघाट जिले में मुख्यतः पिछड़े तथा जनजातियों के लोग बड़ी संख्या में निवास करते थे। वर्ष 1951 की जनगणना के अनुसार जिले में अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों की जनसंख्या 1,34,840 थी तथा इसमें से 60,545 अनुसूचित जातियों के लोग थे।[20]

उपसंहार

उपर्युक्त शिक्षा संबंधी ऐतिहासिक तथ्यों से विदित होता है कि बालाघाट जिले में शिक्षा का प्रसार नही के बराबर था। फलतः यहाँ की जनता अशिक्षा व अज्ञान के अन्धकार में भटकती रही। 1818 में यह ब्रिटिश नियंत्रण में चला गया। 1854 ई. में नागपुर का भोंसला राज्य औपचारिक रूप से ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया। अतः इसी समय से बालाघाट जिले में आधुनिक एवं पाष्चात्य शिक्षा का प्रादुर्भाव हुआ। अंग्रेज प्रषासकों का शैक्षणिक दृष्टिकोण केवल विद्यालयीन शिक्षा तक सीमित रहा। उच्च, तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा पूर्णतः उपेक्षित रही। अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों की शिक्षा के लिये कतिपय उदार प्रयास अवष्य किये गये लेकिन महिला शिक्षा के प्रति विकास हेतु कोई ठोस प्रयास नहीं किये गये।

यह नितान्त सत्य है कि स्वतंत्रता प्राप्ति एवं राज्य पुनर्गठन के पष्चात् केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु उल्लेखनीय कार्य किये गये। शिक्षा के क्षेत्र में गति आई। शैक्षणिक संस्थाओं की संख्या में अप्रत्याषित रूप से वृध्दि हुई। लेकिन इन सब के बावजूद बालाघाट जिला मध्यप्रदेश के अन्य जिलों की शैक्षणिक प्रगति की तुलना में काफी पिछड़ा रहा। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जिले में अब तक किये गये शैक्षणिक प्रयास अपूर्ण साबित हुये। अतः जिले में शिक्षा के सर्वांगीण विकास हेतु और अधिक राजकीय प्रयासों की आवश्यकता थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सिन्हा,ए.एम. : मध्यप्रदेश जिला गजेटियर बालाघाट 1998 – हिन्दी संस्करण पृ. 225*

2. *मिश्रा, डॉ. लक्ष्मी : मध्यप्रदेश में शिक्षा – प्रथम संस्करण 1982 भोपाल पृ. 13*
3. *सिन्हा, ए.एम. : मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, बालाघाट अंग्रेजी संस्करण 1992 पृ. 277*
4. *तिवारी, कुंजबिहारी : बालाघाट जिले के 50 वर्ष 1999 पृ. 122–23.*
5. *मैथ्यू, वी. के. : (प्रधान संपा) मेथोडिस्ट चर्च बालाघाट स्मारिका 2007 पृ. 01*
6. *सिन्हा, ए.एम. : ——————पूर्वोक्त ———————— अंग्रेजी संस्करण 1992 पृ. 277*
7. *सी.ई. लॉ : बालाघाट डिस्ट्रिक्ट गजेटियर वॉल्यूम बी 1927 पृ. 82*
8. *मिश्रा, डॉ. लक्ष्मी : ——————पूर्वोक्त ———————— पृ. 17*
9. *मिश्रा, डॉ. लक्ष्मी : ——————पूर्वोक्त ———————— पृ. 287*
10. *मिश्रा, डॉ. लक्ष्मी : ——————पूर्वोक्त ———————— पृ. 20*
11. *डेव्लपमेंट ऑफ एजुकेषन इन मध्यप्रदेश 1947–64 भोपाल गवर्नमेंट सेन्ट्रल प्रेस 1965 पृ. 7–9*
12. *सिन्हा, ए.एम. : ——————पूर्वोक्त ———————— अंग्रेजी संस्करण 1992 पृ. 288*
13. *तिवारी, कुंजबिहारी : ——————पूर्वोक्त ———————— पृ. 122*
14. *सिन्हा, ए.एम. : ——————पूर्वोक्त ———————— अंग्रेजी संस्करण 1992 पृ. 290*
15. *सिन्हा, ए.एम. : ——————पूर्वोक्त ———————— अंग्रेजी संस्करण 1992 पृ. 291*
16. *षासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय विवरण पत्रिका 2006–07 से उध्दृत पृ. 01*
17. *सिन्हा, ए.एम. : ——————पूर्वोक्त ———————— अंग्रेजी संस्करण 1992 पृ. 289*
18. *बालाघाट डिस्ट्रिक्ट स्टेटिस्कल हैण्ड बुक 1974*
19. *बालाघाट डिस्ट्रिक्ट गजेटियर सेंसस हैण्ड बुक 1951 पृ. 76*
20. *सी.पी. एडमिनिस्ट्रेषन रिपोर्ट 1888–89 पृ. 53*